स्वर्ग और नर्क में वार्तालाप (3 का भाग 2): संवाद और चर्चा

रेटिंग:

विवरण:

श्रेणी: लेख परलोक स्वर्ग

श्रेणी: लेख परलोक नरक की आग

द्वारा: Aisha Stacey (© 2012 IslamReligion.com)

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 04 Nov 2021

जन्नत के लोगों और नर्क के लोगों के बीच बातचीत

स्वर्ग निवासी और नर्क निवासी के बीच होने वाले संवाद का ज़िक्र क़ुरआन में कई जगहों पर किया गया है। जब हम इन छंदों को पढ़ते हैं और उन पर विचार करते हैं, तो यह हम पर निर्भर है कि हम उन लोगों की निराशा से चिंतन करें और कुछ सीखने का प्रयास करें जो नरक की भयावहता का सामना करते हैं। हमें उनके डर का स्वाद चखना चाहिए और उनकी गलतियों से सीखना चाहिए। क़ुरआन में उनके बारे में पढ़ना हमें उनके दर्द का कुछ अनुभव कराता है, लेकिन इससे हम यह भी सीख सकते हैं कि हम इस गंतव्य से कितनी आसानी से बच सकते हैं।

वे स्वर्गों में होंगे। वे प्रश्न करेंगे अपराधियों से, "तुम्हें क्या चीज़ ले गयी नरक में।" वे कहेंगे: "हम नहीं थे प्रार्थना करने वालो में से। और नहीं भोजन कराते थे निर्धन को। तथा कुरेद करते थे कुरेद करने वालों के साथ। और हम झुठलाया करते थे प्रतिफल के दिन (प्रलय) को जब तक कि हमारी मौत न आ गई।" (क़ुरआन 74:40-47)

तथा स्वर्गवासी नरकवासियों को पुकारेंगे कि हमें, हमारे पालनहार ने जो वचन दिया था, उसे हमने सच पाया, तो क्या तुम्हारे पानलहार ने तुम्हें जो वचन दिया था, उसे तुमने सच पाया? वे कहेंगे कि हाँ!"...

(क़ुरआन 7:44)

तथा नरकवासी स्वर्गवासियों को पुकारेंगे कि "हमपर थोड़ा पानी डाल दो अथवा जो अल्लाह ने तुम्हें प्रदान किया है, उसमें से कुछ दे दो।" वे कहेंगे कि "ईश्वर ने ये दोनों अविश्वासियों के लिए वर्जित कर दिया है।" (क़ुरआन 7: 50)

यह स्पष्ट है कि स्वर्ग में रहने वालों को दी गई आशीषों को देखने और सुनने के बाद से नर्क में रहने वालों की पीड़ा बढ़ जाती है।

स्वर्ग वालों की आपस में बातचीत

क़ुरआन में ईश्वर के वचन हमें बताते हैं कि स्वर्ग के निवासी एक दूसरे से अपने पिछले जन्मों के बारे में पूछेंगे।

“और वे (स्वर्ग वासी) सम्मुख होंगे एक-दूसरे के प्रश्न करते हुए। वे कहेंगेः इससे पूर्व हम अपने परिजनों में (ईश्वर के दंड से) डरते थे। तो ईश्वर ने उपकार किया हमपर तथा हमें सुरक्षित कर दिया तापलहरी की यातना से।" (क़ुरआन 52:25-27)

स्वर्ग के लोगों के बीच बातचीत का वर्णन करने वाले अधिकांश छंद इस बात की पुष्टि करते हैं कि वे अपने धर्मी व्यवहार को जारी रखेंगे और ईश्वर की उस आशीष के लिए धन्यवाद देंगे जो ईश्वर ने उन्हें दी है। यद्यपि वे ईश्वर के वचन को सत्य मानते थे और उसी के अनुसार व्यवहार करते थे, स्वर्ग की सर्वोच्च भव्यता उन्हें कृतज्ञता से अभिभूत कर देगी।

तथा वे कहेंगेः सब प्रशंसा उस ईश्वर के लिए हैं, जिसने दूर कर दिया हमसे शोक। वास्तव में, हमारा पालनहार अति क्षमी, गुणग्राही है। जिसने हमें उतार दिया स्थायी घर में अपने अनुग्रह से। नहीं छूएगी उसमें हमें कोई आपदा और न छूएगी उसमें कोई थकान। (क़ुरआन 35:34-35)

तथा वे कहेंगेः "सब प्रशंसा ईश्वर के लिए हैं, जिसने सच कर दिखाया हमसे अपना वचन तथा हमें उत्तराधिकारी बना दिया इस धरती का, हम रहें स्वर्ग में, जहाँ चाहें। क्या ही अच्छा है कार्यकर्ताओं का प्रतिफल!” (क़ुरआन 39:74)

नर्क के लोगों की आपस में बातचीत

जब नर्क की आग में अनंत काल बिताने के लिए नियत लोगों को आग में डाल दिया जाएगा, तो वे चौंक जाएंगे कि जिन लोगों या मूर्तियों पर उन्होंने भरोसा किया था और उनका पालन किया था, वे उनकी मदद करने में सक्षम नहीं हैं। क़ुरआन में जिन नेताओं को घमंडी कहा गया है, वे अपने कमजोर अनुयायियों के सामने स्वीकार करेंगे कि वे खुद भटक गए थे। इस प्रकार जो कोई भी उनका अनुसरण करता था, वह दया से रहित जीवन में उनका अनुसरण करता था।

और एक-दूसरे के सम्मुख होकर परस्पर प्रश्न करेंगेः कहेंगे कि "तुम हमारे पास आया करते थे दायें से (अर्थात, हमें बहुदेववाद का आदेश दिया, और हमें सच्चाई से रोक दिया)।" वे कहेंगेः "बल्कि तुम स्वयं विश्वासी न थे। तथा नहीं था हमारा तुमपर कोई अधिकार, बल्कि तुम सवंय अवज्ञाकारी थे। तो सिध्द हो गया हमपर हमारे पालनहार का कथन कि हम (यातना) चखने वाले हैं। तो हमने तुम्हें कुपथ कर दिया। हम तो स्वयं कुपथ थे।" (क़ुरआन 37:27-32)

और सब अल्लाह के सामने खुलकर आ जायेंगे, तो निर्बल लोग उनसे कहेंगे, जो बड़े बन रहे थे कि हम तुम्हारे अनुयायी थे, तो क्या तुम ईश्वर की यातना से बचाने के लिए हमारे कुछ काम आ सकोगे? वे कहेंगेः "यदि ईश्वर ने हमें मार्गदर्शन दिया होता, तो हम अवश्य तुम्हें मार्गदर्शन दिखा देते। अब तो समान है, चाहे हम अधीर हों या धैर्य से काम लें, हमारे बचने का कोई उपाय नहीं है।" (क़ुरआन 14:21)

और जब मामला तय हो जायेगा, तो यह मामला होगा कि कौन स्वर्ग के लिए नियत है और कौन नर्क के लिए नियत है, तब नर्क का सबसे कुख्यात, बदनाम वासी, शैतान स्वयं एक महान सत्य प्रकट करेगा। यह एक सच्चाई और परिदृश्य है जिसे ईश्वर ने क़ुरआन में हमारे सामने प्रकट किया, लेकिन जिसे बहुत से लोगों ने गंभीरता से नहीं लिया कि वह "शैतान" झूठा था। शैतान के वादे कभी पूरे नहीं होने वाले थे, उसके वादे खोखले थे और वह खुद ईश्वर में विश्वास करता था।

जब निर्णय कर दिया जायेगा, तो शैतान कहेगा: "वास्तव में, ईश्वर ने तुम्हें सत्य वचन दिया था और मैंने तुम्हें वचन दिया, तो अपना वचन भंग कर दिया और मेरा तुमपर कोई दबाव नहीं था, परन्तु ये कि मैंने तुम्हें (अपनी ओर) बुलाया और तुमने मेरी बात स्वीकार कर ली। अतः मेरी निन्दा न करो, स्वयं अपनी निंदा करो, न मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ और न तुम मेरी सहायता कर सकते हो। वास्तव में, मैंने उसे स्वीकार कर लिया, जो इससे पहले तुमने मुझे ईश्वर का साझी बनाया था। निःसंदेह अत्याचारियों के लिए दुःखदायी यातना है।" (क़ुरआन 14:22)

इस लेख का वेब पता:

https://www.islamreligion.com/hi/articles/5261

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।